प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन,
एम.ए.(हिन्दी),एम.ए.(समाजशास्त्र)
पीएच.डी.
महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रमाण - पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री अरुणकुमार राजाराम कांबळे ने मेरे निर्देशन में कमलेश्वर की कहानियों में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन ` शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल.की उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है।

निर्देशिका

स्थल :कोल्हापुर।
दिनांक :२१/५/१९९७

प्र मा ण - प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. की उपाधि के हेतु लिखा है। इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गयी सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

श्री अरुणकुमार रिजाराम कांबळे,
शोध-छात्र।

स्थल : कोल्हापुर।
दिनांक : ३१।५।२०१७

भूमिका

कमलेश्वर का 'बयान' कहानी संग्रह मैंने एम.ए.के दिनों में ही पढा था। तब 'बयान' की हर कहानी से मैं प्रभावित हो गया था। उनके दो - चार कहानी संग्रह पढने के बाद एक बात स्पष्ट हो गयी कि उनकी कई कहानियाँ महानगरीय जीवन से जुडी हुयी हैं। और यही बात मुझे मेरे एम्.फिल्. के लघु शोध-प्रबन्ध के विषय के बहुत निकट ले गयी।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में मैंने कमलेश्वर की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन और उसकी तमाम समस्याओं को उद्घाटित करने की प्रामाणिक कोशिश की है। यह करते समय सर्वप्रथम 'महानगर' क्या है ? यह देखना मैं उचित समझता हूँ, इसलिए महानगर की उत्पत्ति और विकास से लेकर महानगरीय समाज, परिवार तथा महानगरीय समस्याओं का विवेचन समाजशास्त्रीय दृष्टि से प्रथम अध्याय में किया गया है।

द्वितीय अध्याय में मैंने कमलेश्वर की महानगर से संबंधित सभी कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। यह इसलिए दिया है कि, जिससे लघु शोध-प्रबन्ध को समझाने में सुविधा हो। इन कहानियों का अध्ययन करने के उपरान्त जो तथ्य हाथ आये उनकी चिकित्सा तीसरे और चौथे अध्याय में की गयी है।

तृतीय अध्याय में महानगरीय परिवार, महानगर के सामाजिक, आर्थिक जीवन आदिका स्वरुप कहानियों के आधारपर स्पष्ट किया गया है। विशेषकर इन कहानियों में चित्रित सामाजिक जीवन के अंतर्गत सामाजिक संबंधों की निर्वैयक्तिकता, यांत्रिकता और मानवपन का -हास, आर्थिक विवशता, जीवन के प्रति असुरक्षा की भावना आदि की विवेचना की है।

चतुर्थ अध्याय में कमलेश्वर की कहानियों में महानगरीय जीवन की जो विभिन्न समस्याएँ चित्रित हुयी हैं, उन्हें स्पष्ट किया गया है। इसमें गाँव और कस्बे को छोडने

का दर्द अलगाव और परायापन,ऊब और एकरसता,महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपने छोटेपन का अहसास,जीवन की अनिश्चितता, रिश्तों और संबंधों का थोथापन आर्थिक विवशता और मकानों की समस्या आदि को कहानियों के आधारपर इस अध्याय में उद्घाटित किया गया है।

पंचम अध्याय समग्र शोध-प्रबन्ध का निचोड है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का निखरा हुआ रुप डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन का प्रमाण है। उनके निर्देशन के लिए मैं उनका ऋणी हूँ। मेरे अन्य अध्यापक एवं निर्देशक डॉ.बी.बी.पाटील जी और डॉ.सुनीलकुमार लव्टे जी का भी मैं आभारी हूँ।

महावीर महाविद्यालय के ग्रंथालय से सामग्री संकलन और संदर्भ आदि के संबंध में काफी सहायता मिली। इसी लिए मैं वहाँ के कर्मचारी वर्ग के प्रति आभारी हूँ। इसी महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रभाकर चांदोरकर जी का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने संदर्भ ग्रन्थों के लिए मुझे सहायता की।

मेरी स्वर्गीय माँ की प्रेरणा और आशीर्वाद से ही मैं हर कार्य-सुलभता से कर पाता हूँ, ऐसी मेरी विनम्र धारणा है। यह लघु शोध-प्रबन्ध भी उसी पवित्र धारणा का प्रमाण है। मैं मेरी माँ का हमेशा के लिए ऋणी रहा हूँ। इस लघु शोध-प्रबन्ध के दौरान मेरे मित्र श्री रमेश देरे और श्री सुहास चौगले ने जो सहयोग दिया इसके लिए मैं उन दोनों का आभारी हूँ। उचित निर्देशन के लिए एकबार फिर मैं डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। प्रस्तुत लघु शोध - प्रबन्ध का टंकलेखन श्री बालकृष्ण रा.सावंत (कोल्हापुर) ने किया मैं उनका आभारी हूँ

श्री अरुणकुमार राजाराम कांबळे

कोल्हापुर।

दिनांक :२१ :५:१९९१ :

अनुक्रमणिका

कमलेश्वर की कहानियों में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय 1

महानगर से तात्पर्य —

(१) महानगर से आप क्या समझते हैं ?

(२) महानगर की व्युत्पत्ति और विकास

(३) नगरों के विकास के कारण

(४) नगरीय समुदाय के लक्षण

(५) नगरीय परिवार की समस्याएँ

(६) महानगर की कुछ प्रमुख समस्याएँ ।

द्वितीय अध्याय 20

कमलेश्वर की महानगरीय कहानियों का संक्षिप्त परिचय ।

तृतीय अध्याय 53

कमलेश्वर की कहानियों में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन ।

(१) पारिवारिक जीवन

(२) सामाजिक जीवन

(३) महानगरीय जीवन

(४) आर्थिक जीवन

चतुर्थ अध्याय 73

कमलेश्वर की कहानियों में महानगरीय जीवन की विभिन्न समस्याएँ ।

(१) गाँव और कस्बे को छोड़ने का दर्द

(२) महानगरीय जीवन : अलगाव और परायापन

पृष्ठ क्रमांक

(३) महानगरीय जीवन : ऊब और एकरसता
(४) महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपने छोटेपन का अहसास
(५) महानगरीय परिवेश में व्यक्ति के जीवन की अनिश्चितता
(६) महानगरीय जीवन में रिश्तों और संबंधों का थोथापन।
(७) महानगरीय जीवन में आर्थिक तंगी
(८) महानगर में मकानों की समस्या

पंचम अध्याय 93

उपसंहार।

परिशिष्ट - एक 101

आधार ग्रन्थ

परिशिष्ट - दो 102

संदर्भ ग्रन्थ सूचि।

..